Ch-8

11/11/2022

PANKAJ

Page No.:

Date : / /

(ii) अलगाववादी आंदोलन :—

⇒ कुछ मिजो लोगों का मानना था कि वे कभी भी 'ब्रिटिश इंडिया' के अंग नहीं रहे इसलिए भारत संघ से इनका कोई नाता नहीं है।

⇒ सन् 1966 में मिजो नेशनल फ्रंट ने आजादी की माँग करते हुए सशस्त्र अभियान प्रारम्भ किया। इस प्रकार भारतीय सेना और विद्रोहियों के मध्य दो दशक तक चली लड़ाई प्रारम्भ हुई।

⇒ मिजो नेशनल फ्रंट ने गुरिल्ला युद्ध किया। दो दशकों तक चली बगावत में प्रत्येक पक्ष को हानि उठानी पड़ी।

⇒ सन् 1986 में राजीव गांधी और ~~लालडेंगा~~ लालडेंगा के बीच एक शांति समझौता हुआ। समझौते के अन्तर्गत मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और उसे कुछ विशेष अधिकार दिए गए। लालडेंगा मुख्यमंत्री बने।

⇒ आज मिजोरम पूर्वोत्तर का सबसे शांतिपूर्ण राज्य है और उसने कला, साहित्य तथा विकास की दिशा में अच्छी प्रगति की है।

⇒ नगालैंड की कहानी भी मिजोरम की तरह है। अंगमी जापू फ़िजो के नेतृत्व में नगा लोगों के एक तबके ने 1951 में अपने को भारत से आज़ाद घोषित कर दिया।

⇒ नगा लोगों के एक तबके ने भारत सरकार के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए लेकिन अन्य विद्रोहियों ने इस समझौते को नहीं माना। नगालैंड की समस्या का समाधान होना अब भी बाकी है।

(5.) बाहरी लोगों के खिलाफ आंदोलन :—

⇒ सन् 1979 से 1985 तक चला असम आंदोलन बाहरी लोगो के विरुद्ध चले आंदोलनों का सबसे अच्छा उदाहरण है असमी लोगों को संदेह था कि बांग्लादेश से आकर बहुत - सी मुस्लिम आबादी असम में बसी हुई है।

⇒ सन् 1979 में ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू AASU ने) विदेशियों के विरोध में एक आंदोलन चलाया। 'आसू' एक छात्र संगठन था। और उसका जुड़ाव किसी भी राजनीतिक दल से नहीं था।

⇒ छः साल की सतत अस्थिरता के बाद राजीव गाँधी के नेतृत्व वाली सरकार ने 'आसू' के नेताओं से बातचीत शुरू की इसके परिणामस्वरूप सन् 1985 में एक समझौता हुआ।

⇒ समझौते में यह तय किया गया कि जो लोग बांग्लादेश युद्ध के दौरान अथवा उसके बाद के वर्षों में असम आए हैं उनकी पहचान की जाएगी और उन्हें वापस भेजा जाएगा।

⇒ 'आसू' और असम गण संग्राम परिषद् ने साथ मिलकर अपने को एक क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टी के रूप में संगठित किया। इस पार्टी का नाम 'असम गण परिषद्' रखा गया।

⇒ असम - समझौते से शांति कायम हुई लेकिन 'आप्रवास' की समस्या का समाधान नहीं हो पाया।

(6.) समाहार और राष्ट्रीय अखंडता :—

⇒ आजादी के दशक बाद भी राष्ट्रीय अंखडता के कुछ मसलों का समाधान पूरी तरह से नहीं हो पाया। कभी कहीं से पृथक राज्य बनाने की माँग उठी तो कहीं आर्थिक विकास का मसला उठा, कहीं-कहीं से अलगाववाद के स्वर उभरे।

⇒ पहला एवं बुनियादी सबक तो यही है कि क्षेत्रीय आकांक्षाएँ लोकतांत्रिक राजनीति का अभिन्न अंग है। ग्रेट-ब्रिटेन जैसे छोटे देश में भी स्कॉटलैण्ड, वेल्स और उत्तरी आयरलैण्ड में क्षेत्रीय आकांक्षाएं उभरी है। स्पेन में बास्क लोगों और श्रीलंका में तमिलों ने अलगाववादी माँग की।

⇒ इन मामलो से हमें अपने संविधान निर्माताओं की दूरदृष्टि का पता चलता है। वे विभिन्नताओं को लेकर अत्यंत सजग थे। हमारे संविधान के प्रावधान इस बात के साक्ष्य है।

⇒ भारत का संवैधानिक ढाँचा ज्यादा लचीला और सर्वसमावेशी है।

⇒ ☆ द्रविड़ आंदोलन :—

⇒ भारतीय राजनीति में द्रविड़ आंदोलन क्षेत्रीयतावादी भावनाओं की सर्वप्रथम तथा सबसे प्रबल अभिव्यक्ति थी। इसका नारा था "उत्तर हर दिन बढ़ता जाए, दक्षिण दिनबदिन घटता जाए"। इस आंदोलन का नेतृत्व तमिल समाज सुधारक ई. वी. रामास्वामी नायकर 'पेरियार' के हाथो में था।

PANKAJ
Page No.:
Date: / /

⇒ इस आंदोलन से एक राजनीतिक संगठन द्रविड़ कषगम का सूत्रपात हुआ।

★ सिक्किम का विलय :—

⇒ अप्रैल 1975 में एक प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव में भारत के साथ सिक्किम के पूर्ण विलय की बात कही गई थी।

⇒ इस प्रस्ताव के तुरंत बाद सिक्किम में जनमत-संग्रह कराया गया और जनमत-संग्रह में जनता ने विधानसभा के फैसले पर अपनी मुहर लगा दी और सिक्किम भारत का 22वाँ राज्य बन गया।

★ गोवा की मुक्ति :—

⇒ गोवा में पुर्तगाल से आजादी के लिए एक मजबूत जन आंदोलन चला, इस आंदोलन को महाराष्ट्र के समाजवादी सत्याग्रहियों ने बल प्रदान किया। अंततः दिसंबर सन् 1961 में भारत सरकार ने गोवा में अपनी सेना भेजी। दो दिन की कार्रवाई में भारतीय सेना ने गोवा को मुक्त करा लिया। गोवा, दमन और दीव संघ शासित प्रदेश बने।

⇒ 1987 में गोवा भारत का संघ राज्य बना।